श्रीश्रीगौरांगविधुर्जयति

श्री हरिलीला

रचयिता—श्री ब्रह्मगोपालजी

प्रकाशक—

कृष्णदास

पुस्तक मिलने का पता--

(१) श्रीरामनिवास खेतान की दूकान,

सत्रामण सालिग्राम मन्दिर के नीचे,

लोई बाज़ार, वृन्दावन।

(ज़ि० मथुरा)

(२) लाला चेतरामजी, कोसीकलाँ, मथुरा।

(३) बाबा कृष्णदास,

क्या०-बाबा आनन्ददासजी,

कृष्णगंगा आस्थान,

मथुरा।
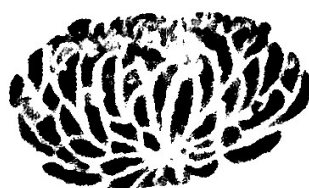
❀ श्री राधामाधवो जयति ❀

श्रीगीतगोविन्द काव्यकर्त्ता रसिकाचार्य गो० श्रीजयदेवजी के वंशज
श्री ब्रह्मगोपाल गोस्वामि प्रणीता

श्रीहरिलीला

संशोधक—

तदीयवंशज आचार्य्य गोस्वामी
श्रीयमुनावल्लभजी शास्त्री

जिसको बरसाना (कोसी) निवासी परमभक्त लाला चतुर्भुजजी
(चेतरामजी) से द्रव्य की सहायता
देकर मुद्रित कराया।

ता:—१४ सोमवार
श्रीगौर पूर्णिमा
सं० २००५
प्रथमा वृत्ति १०००

प्रकाशक—
श्री श्री चैतन्यचरनानुचर
कृष्णदास ।
मूल्य दो आना।

॥ प्राक्कथन ॥

जय रूप सनातन भट्ट रघुनाथ। श्रीजीव गोपाल भट्टदास रघुनाथ॥
भज-निताई गौर राधेश्याम। जय हरेकृष्ण हरेराम॥

करुणामय श्री गुरुदेवजी की असीम कृपा से हम अनेक प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थों को प्राप्त करने में समर्थ हुए हैं। तात्पर्य यह है कि श्री माध्व गौडेश्वर सम्प्रदाय में अनेक ग्रन्थ विराजमान हैं, जिनकी इयत्ता करने में कोई व्यक्ति किसी काल में समर्थ नहीं है। परन्तु यह वृहत् ग्रन्थ भंडार संस्कृत तथा वंग-भाषा में होने के कारण एतद्देशीय वैष्णवों के लिये अगम्य है। अब रही व्रजभाषा ग्रन्थों को बात सो उसकी भी कोई इयत्ता नहीं है। कुछ अल्प परिचित सज्जनों का कहना है कि माध्व गौड़ेश्वर सम्प्रदाय की व्रजभाषा में कोई बाणी विशेष नहीं हैं। परन्तु यह बात सर्वांश में सार हीन है। गंभीर खोज करने पर हमें अनेक रसिक शिरोमणि महात्माओं की बाणी व्रजभाषा में प्राप्त हुई हैं, जिनको हम क्रमशः प्रकाशित कर रहे हैं।

सम्प्रति प्राप्त वाणियों में से यह अमूल्य दुर्लभ श्रीराधामाधव लीला-रस संपुटित "हरिलीला" नामक ग्रन्थ गीतगोविन्द-कार श्रीजयदेव गोस्वामी वंशज श्री ब्रह्मगोपालजी की कृति है जो प्रायः साढ़े तीन-सौ वर्ष से भी प्राचीन है। आज बड़े सौभाग्य से उक्त श्रीजयदेव गोस्वामी वंशज श्री गो० यमुनावल्लभजी महोदय की कृपा से यह अमूल्य ग्रन्थ रत्न प्राप्त हुआ। श्रीयुत पूज्य परम रसिक वर बाबा श्री गौरांगदासजी महाराज के कृपापात्र, बरसाना (कोसी) निवासी श्री लाला वनखण्ड आत्मज श्री लाला चतुर्भुज (चेतराम) जी के सम्पूर्ण धनसहाय से इस ग्रन्थ को मुद्रित कराने में हम समर्थ हुए हैं। भगवान् श्री श्री चैतन्य महाप्रभु आपका मंगल करें तथा भविष्य में अन्य सद्-ग्रन्थों को भी प्रकाशन करने में समर्थन करें।

विनीत प्रकाशक—
श्री बाबा कृष्णदास
कुसुम सरोवर पोस्ट राधाकुण्ड
जिला-मथुरा

गौर-पूर्णिमा
सं० २००५ वि०

श्री हरिलीला महिमा

सुधानां चान्द्रीणामपि मधुरिमोन्माददमनी।
दधाना राधादिप्रणयघनसारैः सुरभिताम्॥
समन्तात् सन्तापोद्गमविषमसंसारसरणी।
प्रणीतां ते तृष्णां हरतु "हरिलीला" शिखरिणी॥ १॥

(श्री रूप गोस्वामिकृत विदग्धमाधवे)

(भाव) गर्मी में प्यास बहुत लगती है उसकी बढ़िया दवा दही से बनी शिखरन है जिसमें मीठा और सुगन्धि-दोनों पड़ते हैं। उसी शिखरन को रूपान्तर से श्री रूप गोस्वामीजी संसार तापों से उत्पन्न हुई तृष्णा की उत्तम औषधि बता रहे हैं।

जब से यह जीव संसार पथ का पथिक बना तभी से पुत्र कलत्र तन धन की जलन बढ़ती ही गई इतने प्राचीन चीड़ रोग की दवा श्री हरिलीला रूप श्री खंड है इसमें चन्द्रकिरणों की सुधाओं को दवाने वाली मिठास है और श्रीराधा स्वामिनी की सहचरियों के प्रणय रूप भाव ही कपूर की सुगंधि है। ऐसी श्री हरिलीला नामक श्री खंड प्यासे पथिकों की प्यास बुझावे इसे नित्य पीओ यही आशीर्वाद है।

ग्रन्थ कर्ता गो० श्री ब्रह्मगोपालजी की

वंशपरम्परा

श्री गिरधारीजी मिश्र
श्री हरदेवजी ,,
श्री भोजदेवजी ,,
गो० श्री जयदेवजी कविराज
(गीत गोविन्द काव्य कर्ता)
,, ,, कृष्णदेवजी
,, ,, गोविन्द देवजी
,, ,, मुकुन्द देवजी
,, ,, अनन्य देवजी
,, ,, माधवलालजी
,, ,, प्रद्युम्नलालजी
,, ,, मोहनलालजी
,, ,, नन्दगोपालजी
,, ,, गुरुगोपालजी

गो० श्री रामरायजी
गो० श्री चन्द्रगोपालजी
,, ,, राधिकानाथजी
,, ,, ब्रह्मगोपालजी ग्रंथकर्ता
,, ,, कल्याणरायजी
,, ,, चुन्नीलालजी
,, ,, नन्दकिशोरजी
,, ,, ब्रजकिशोरजी
,, ,, वासुदेवजी
,, ,, प्रियतमलालजी
,, ,, यमुनावल्लभजी
,, ,, देवकीनन्दनजी
,, ,, गोविन्द वल्लभजी
,, ,, विट्ठलनाथजी

श्रीश्रीगौराङ्गविधुर्जयति ।

ग्रन्थकर्ता का परिचय

श्रीमद्गीतगोविन्द काव्य कर्ता रसिक मुकुटमणि भगवान् श्रीजयदेव कविराज गोस्वामीजी को कौन नहीं जानता । आपके ही वंश में रसिकराज श्रीब्रह्मगोपाल गोस्वामि प्रभु का प्रादुर्भाव हुआ था ।

भगवच्छ्री कृष्णचैतन्य महाप्रभुजी के साथ शेषावतार श्रीमन्नित्यानन्द प्रभुजी हुए । आपके कृपापात्र परमहंस चूड़ामणि श्रीरामराय गोस्वामीजी के लघुभ्राता श्रीप्रभुचन्द्रगोपाल गोस्वामीजी श्रीचित्रासखी का अवतार हुए । आपके ही पोते इस ग्रन्थ के बनाने वाले श्रीब्रह्मगोपाल गोस्वामीजी हैं ।

वि० सं० १६ शताब्दि में फाल्गुन शुक्ला १३ गुरुवार को श्रीवृन्दा-वन में वंशीवट के निकट श्रीराधिकानाथ गोस्वामीजी की धर्मपत्नी सौभाग्यवती श्रीमूर्त्ति बहुजी से आपका प्रादुर्भाव हुआ । पिताजी ने स्वयं ही आपको पढ़ाया यज्ञोपवीत कराकर श्रीगोपालमंत्रराज की दीक्षा दी और अनुष्ठान कराया ।

गो० श्रीब्रह्मगोपालजी महाराज का विवाह आगरे (अग्रवन) निवासी पं० मोहनलालजी भोजेपोत्रे की पुत्री श्रीरासेश्वरीजी के साथ हुआ था । विवाह के थोड़े समय पीछे ही आपके पिता श्रीराधिकानाथ प्रभु नित्यलीला में पधार गये ।

कुछ वर्ष पीछे ही श्रीयमुनाजी की बाढ़ में आपका घर प्रवाहित होगया । तब आप सपत्नीक श्वसुर गृह में आगरे रहने लगे और

श्रीश्रीगौराङ्गविधुर्जयति ।

ग्रन्थकर्ता का परिचय
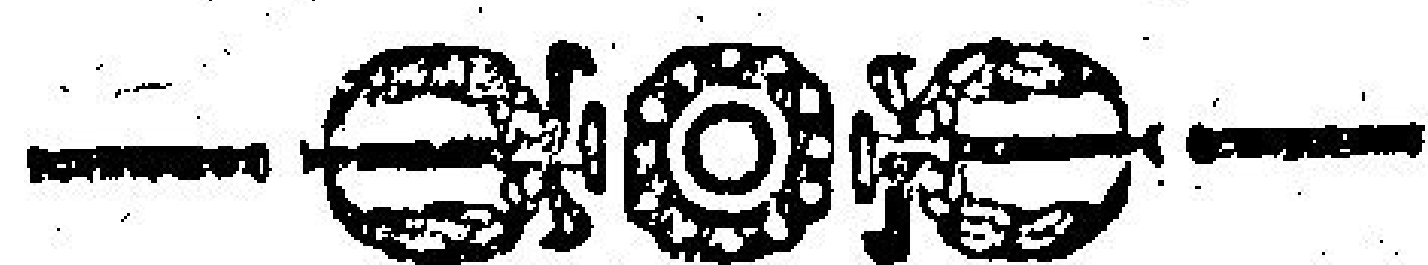
श्रीमद्गीतगोविन्द काव्य कर्ता रसिक मुकुटमणि भगवान् श्रीजयदेव कविराज गोस्वामीजी को कौन नहीं जानता । आपके ही वंश में रसिकराज श्रीब्रह्मगोपाल गोस्वामि प्रभु का प्रादुर्भाव हुआ था।

भगवच्छ्री कृष्णचैतन्य महाप्रभुजी के साथ शेषावतार श्रीनित्यानन्द प्रभुजी हुए। आपके कृपापात्र परमहंस चूड़ामणि रामराय गोस्वामीजी के लघुभ्राता श्रीप्रभुचन्द्रगोपाल गोस्वामीजी चित्रासखी का अवतार हुए। आपके ही पोते इस ग्रन्थ के बनाने वाले श्रीब्रह्मगोपाल गोस्वामीजी हैं।

वि० सं० १६ शताब्दि में फाल्गुन शुक्ला १२ गुरुवार को श्रीवृन्दावन में वंशीवट के निकट श्रीराधिकानाथ गोस्वामीजी की धर्मपत्नी भाग्यवती श्रीमूर्त्ति बहुजी से आपका प्रादुर्भाव हुआ। पिताजी ने ही आपको पढ़ाया यज्ञोपवीत कराकर श्रीगोपालमंत्रराज की दीक्षा दी और अनुष्ठान कराया।

गो० श्रीब्रह्मगोपालजी महाराज का विवाह आगरे (अग्रवन) निवासी पं० मोहनलालजी भोजेपोत्रे की पुत्री श्रीरासेश्वरीजी के साथ हुआ था। विवाह के थोड़े समय पीछे ही आपके पिता श्रीराधिकानाथ जी नित्यलीला में पधार गये।

कुछ वर्ष पीछे ही श्रीयमुनाजी की बाढ़ में आपका घर प्रवाहित हो गया। तब आप सपत्नीक श्वसुर गृह में आगरे रहने लगे और

यहाँ एक मकान खरीद लिया, किन्तु एक दिन श्रीवृन्दावन की भारी स्मृति हुई और आप हिलकी भरकर रोने लगे।

पं० मोहनलालजी ने यह सब हाल देखकर कहा कि चलो श्रीवृन्दावन में दूसरी जगह ठीक करादें। इधर-उधर बात चलाने से मालूम हुआ कि श्रीवृन्दावन में गवालियर महाराज की भी ज़मीन है आप श्रीब्रह्मगोपालजी को साथ ले गवालियर पहुँचे।

जब राज दरबार में सिपाही से खबर कराई कि कोई पंडित मिलने आये हैं तो महाराज ने सिपाहो से कहा कि अभी यज्ञ में बहुत विद्वान् बुलाये थे लेकिन—"कोई भी जल की वर्षा न करा सका, अब पंडितों से मिलकर क्या करें प्रजा तो अनावृष्टि के कारण मर रही है अगर कोई चमत्कारी हों तो बुलालाओ।

सिपाही ने सारा समाचार आपको आकर सुनाया, पं० मोहन लालजी सुनकर चुप हो गये परन्तु श्री ब्रह्मगोपालजी ने हँस कर आज्ञा दी कि हम एक वार मिलना चाहते हैं।

जब राजा साहब से मुलाकात हुई तो वही प्रसंग सामने आ श्री गोस्वामीजी ने वर्षा के लिये वचन दे दिया कि आज रात १२ वजे वर्षा हो जावेगी। राजा ने आपको महल में ठहरा लिय रात आते ही वही वर्षा का समय आया, भक्तवत्सल भगव श्री राधामाधवजी ने अपने भक्त का वाक्य सत्य करने के लिये ऐ वर्षा की जो चार घंटे में समस्त प्रजा के लोग आनन्द में निम हो गये। और श्री गो० ब्रह्मगोपाल जी महाराज का जय ज कार हुआ।

गवालियर नरेश ने बहुत सा द्रव्य आपकी भेट किया औ आपको हाथीपर सवार कर श्री बृन्दावन लाये। बहुत से स्था दिखलाये किन्तु आपने श्री वृन्दावन के हरे वृक्ष न कटवाने पड़ें इ कारण एक ऊजड़ जगह के लिये आज्ञा देदी। भूपति ने वही आप भेट कर दी और कहा कि इसमें एक स्थान वनवादें इस पर आप

राजा को श्री सनातन गोस्वामीजी के भोट कम्बल की कथा सुनाकर उत्कट वैराग्य का परिचय दिया राजा ने कहा सत्य है श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभुजी के सेवक ऐसे ही होते हैं यह कह आपकी आज्ञा ले ग्वालियर को विदा हुए।

श्रीब्रह्मगोपाल प्रभु ने श्री बृन्दावन के समीपवर्ती ग्रामों से अपनी जाति के सारस्वत ब्राह्मणों को बुलाकर शिष्य किया, और उनके ३२ घर बसाकर उस स्थान का नाम—"श्री राधामाधवजी का घेरा" रख दिया। किन्तु श्रीमान के उन ब्राह्मण सेवकों ने आपके नाम से ही उस स्थान का नाम "ब्रह्मपुरी विख्यात किया जो आज पर्यन्त विद्यमान है।

आपके वंशोद्भव श्रीमद्भागवतचन्द्रमा श्रीनन्दकिशोर गोस्वामीजी ने लिखा है।

श्लोक—

येन "ब्रह्मपुरी" द्विजेन्द्रवसतिर्वृन्दावने स्थापिता
द्वात्रिंशद्गृहमध्यगश्चविदितो भट्टोपनामा क्वचित्
राधामाधवमन्दिरं विरचयन् श्रीराधिकानाथजो
गोस्वामिप्रभुवर्य एव शुशुभे श्री ब्रह्मगोपालकः (१२)

(वंश वैजयन्ती उत्तरार्द्ध)

अर्थात् जिन्होंने श्रीधामवृन्दावन में सारस्वत ब्राह्मणों की पुरी पेत की और ३२ घरों के बीच में श्रीराधा माधवजी का मन्दिर या। जो कभी भट्टजी नाम से भी विख्यात हुए वे श्रीराधिकानाथ के पुत्र गो० श्रीब्रह्मगोपालजी महाराज परमशोभायमान हुए।

आप प्रति वर्ष वैष्णवों को साथ लेकर श्रीब्रजयात्रा चार महीने री किया करते थे, और नित्य श्रीमद्भागवत की कथा द्वारा लीला ों का माहात्म्य सुनाते थे।

आपकी पद गायन में बड़ी रुचि रहती। श्रीमद्‌वल्लभाचार्य महाप्रभुजी के पौत्र गो० श्रीगोकुलनाथजी महाराज आपसे बहुत प्रेम करते थे इस कारण बहुत समय श्रीगोकुल में विराजमान रहे।

आपने श्रीराधा माधव भाष्य पर "वस्तु बोधिनी" टिप्पनी लिखी है जिसका कुछ अंश प्रकाशित हो चुका है और भी कितने ही ग्रन्थ हैं जिनमें से ब्रजभाषा का एक ग्रन्थ श्रीहरिलीला आपके हाथ में है।

इसमें अष्टयाम सेवा श्रीप्रियाप्रियतमजू की अष्ट सखियों की कुंजों में क्रम से वर्णन की है जो आजतक किसी वाणी में देखने में नहीं आई।

एक समय बुन्देलखंड के छतरपुर नरेश महाराजा श्रीविश्वनाथ सिंहजी के महलों में एक मास हमारी श्रीमद्भागवत कथा हुई थी। महाराजा ने यह पुस्तक हमको भेट में दी और भी हमारे घर के ग्रन्थ उनके यहाँ थे किन्तु उनके देहावसान के पीछे फिर हमारा जाना नहीं हुआ।

रसिकजन एवं गौडीय वैष्णवों से अत्यन्त आग्रह है कि वे ऊ से ऊंचे साधन में इस साध्यग्रन्थ का नित्य सेवन करें और अपने अपने मन्दिरों में इसकी पदावली से सेवा करावें।

इतना ही लिखना पर्याप्त है कि छिपा हुआ यह अति प्राचीन ग्रन्थ रत्न आप सबको सहज ही प्राप्त हो गया है यही श्रीराधामाधव जी की अनन्य कृपा है।

अन्त में कुसुम सरोवर वाले परमहंस श्रीकृष्णदास बाबाजी महाराज को धन्यवाद है जो आजकल पुरातन ग्रन्थों के प्रकाशन में ही अपना अमूल्य समय दे रहे हैं। तथा उनके प्रयास से ही यह ग्रन्थ-रत्न प्रकाशित हो रहा है।

लेखक—

श्रीजयदेवचरणानुचर

आचार्य श्रीयमुनावल्लभगोस्वामी शास्त्री

ब्रह्मपुरी-(विहारीपुरा-श्रीवृन्दावनधाम)

मुद्रक—राजनरायन अग्रवाल बी० ए०, मॉडर्न प्रेस, आगरा।

॥ श्री राधामाधवो-विजयते ॥

श्री मन्माध्व गौडेश्वराचार्य श्री प्रभु चन्द्र गोपाल गोस्वामीजी के
पौत्र श्रीब्रह्म गोपाल जी (श्री प्रियासखी) कृत।

॥ श्री हरिलीला प्रारभ्यते ॥

❀—⌒]◦[⌒—❀

स्तोत्रं

श्रीराधां माधवप्राणां राधाप्राणं सुमाधवम् ।
निकुञ्जस्थं सखीवृन्दप्रेयसं नित्यमाश्रये ॥ १ ॥
लालित्यलालितां लीलाललितां ललितालकाम् ।
प्रीतिशाखां विशाखां वै वन्दे कुंजरसोत्सुकाम् ॥ २ ॥
चित्राम्बरां चित्रिताङ्गीं विचित्रोच्चारचारुभाम् ।
वन्दे चामीकरोद्भासां श्रीचित्रां चन्द्रदीपिनीम् ॥ ३ ॥
चमत्कारचलच्चारुचरणद्वयराजिताम् ।
श्री चम्पकलतां नौमि चम्पकोद्भासशोभिताम् ॥ ४ ॥
क्वणच्चरणयुग्मेन कुंजकौतूहलप्रदाम् ।
रासरङ्गरसोन्मत्तां रंगदेवीं नमाम्यहम् ॥ ५ ॥
सौभाग्यभाविलासैः श्री प्रियावेशैः स्वलंकृताम् ।
वन्दे श्रीकृष्णकेलिस्थां सुदेवीं नौनिभां मुदा ॥ ६ ॥
तुङ्गविद्यामिन्दुलेखां विलक्षणरसोत्सुकाम् ।
नौमि मुख्याष्टकास्वाद्यरासरङ्गरसामृतम् ॥ ७ ॥
प्रेमावतारं श्रीगौरं महाप्रभुपदार्चितम् ।
श्रीनित्यानन्दसोत्कंठं रामानन्दसुपूजितम् ॥ ८ ॥

श्रीरामरघुभट्टश्रीरूपाद्वैतसनातनम् ।
जीवचन्द्रमधुश्यामलोकादीन् नौमि सर्वदा ॥ ६ ॥
गोस्वामिचन्द्रगोपालं प्रभुं चित्रास्वरूपिणम् ।
श्यामासखीस्वरूपं श्रीराधागोपालमाश्रये ॥१०॥
जयदेवं समारभ्य रसिकान्तान्महोदयान् ।
चन्द्रावल्यादिकान् नौमि परमाचार्यरूपकान् ॥११॥
॥ इति श्रीपरमाचार्य स्तोत्रं समाप्तम् ॥

दोहा—जै माधो मन मोहनी राधा प्राणाधार ।
जै राधा रस बस भये माधव प्रेम अपार ॥

पद

जै जै माधो मन मोहिनी श्रीराधिके ।
जै जै रस सिन्धु सुधा रस अगाधि के ॥
रसिक विहारी जू के वेश केश आधिके ।
रंग अंग अंग की उमंग सुख साधिके ॥
वल्लभा लडेती लाल विप्रलम्भ वाधिके ।
श्री प्रियासखी प्राण धन जीवन आह्लादिके ॥ १ ॥

दोहा—विहरत कुंज कुटीर दोऊश्री जमुना रस तीर ।
नित्य विहार गभीर गति सुरति जुद्ध बलवीर ॥

॥ पद ॥

कुमरि दोऊ विहरत कुंज कुटीर ।
प्रेम पुलकि रसवस मद माते सुरति जुद्ध बलवीर ॥
जथा समय सुन्दर वर प्यारे सुमना जमुना तीर ।

नित्य नवीन विहार निरन्तर पिय-प्यारी गंभीर ॥
श्री प्रियासखी विहारि विहारिन वदन विलोकि अधीर ॥ २॥

दोहा—रसिक रसीले लाडिली लाल छबीले नैन ।
अधर सुधारस पान मद गरवीले पिक वैन ॥

॥ पद ॥

रसिक रसीले श्री लाडिली लाल ।
छैल छबीले गुन गरबीले भाषत पटु पिक वैन रसाल ॥
रंग रंगीले अति चटकीले पीवत अधर सुधारस पाल ।
मदन मत्त मद मुदित न जानत वीतत कित शर्वरि अनुकाल ॥
श्री प्रियासखी हिय चाव चौगुनौ छिन छिन होत विशुद्ध विशाल॥३

ा—श्री राधा माधव रँगे सुरति रंग रस लीन ।
प्यारी पिय के प्रेमवश पिय प्यारी आधीन ॥

॥ पद ॥

करत विहार श्री राधा माधव रस रंगे ।
प्यारी पिय प्रेम पिय प्यारी वश उमंगे ॥
सुरति रस सिन्धु विधु तर तम तरंगे ।
भीजत आधीन मीन मोहन मन मतंगे ॥
वढ़त अनुराग जागि जागि अंगे अंगे ।
श्री प्रियासखी हिय हुलास बढ़त विवि अभंगे ॥ ४ ॥

ा—रस रसाल रस माधुरी सहज रसीले लाल ।
प्रीति वेलि प्यारी परम प्रियतम प्रेम तमाल ॥

॥ पद ॥

जुगल वर सहज रसीले लाल ।
मधुर माधुरी पीतम प्रेमी रसिक रसील रसाल ॥
ललिता कुंज ललित लीलाधर ललित लड़ीली बाल ।
लिपटी प्रीति वेलि पुलकित अति सुन्दरि प्रेम तमाल ।
बीती सकल सर्बरी प्यारी मुख अम्बुज धरि जाल ।
चौंप चौगुनी बढ़त परस्पर-सुमशर कोटि विहाल ॥
प्यारी पीतम कंठ मालिका पीतम प्यारी माल ।
श्रीप्रिया सखी लखि ललिता सहचरि निज रस कुंज निहाल ॥५॥

दोहा—श्री राधा रस मोहिनी मोहे मोहनलाल ।
पीवत तृपित न होत हैं प्रिया सखी प्रतिपाल ॥

॥ पद ॥

श्री राधा रस मोहिनी ।
मोहे मोहनलाल सुधा सुख सोहिनी ॥
पीवत तृपित न होत अधर पीयूष विहारी ।
मधुर मधुर माधुर्य माधुरी मोद महारी ॥
मगन मदन मद मुदिर चंचला चंचल प्यारी ।
गुन गभीर मति धीर-हीर हारावलि न्यारी ॥
कुंज पुंज अलिगुंज विनय करि भाग सुहागी ।
श्री प्रियासखी जो लखी कुंज में जोरी अति अनुरागी ॥

दोहा—नित्य केलि नव कुंज में मंजु गुंज अलि पुंज ।
निज निज मन चीते दोऊ करत प्रेम परिपुंज ॥

॥ पद ॥

करत विवि नित्य केलि नव कुंज।

प्यारी पिय मुख कमल जु अचवत पिय प्यारी मुख कंज।
पी पी मधुर मधुर अधरामृत नहि अँघात मुद मंज।
रंजित वदन मदन मद मोदक जुगल गंड रस पुंज॥
लै रै मुदित परस्पर भावन भाव भरे गत गुंज।
श्री प्रियासखी किलोल सलौने करत प्रेम परिपुंज॥

दोहा—भाग बड़े ललिता अली पावत नवल प्रसाद।
सुरति रंग में रँग रहे लाड़लड़े रति साद॥

॥ पद ॥

रँगे विवि लाड़ लड़े रति राग।

तनक न तृपित होत रस लोभी अप अपने अनुराग॥
सुरति समर में विजय लाभ की अभिलाषा हिय जाग॥
नवल वाल लालन लै घूंघट रूप अधर रस पाग।
श्री प्रिया सखी आजु बड़ सोहत श्री ललिता अलि भाग॥

दोहा—श्री राधा माधव मुदित छुधित न तृपित प्रयंक।
अप अपनी इच्छा सहित खेलत भरि भरि अंक॥

॥ पद ॥

प्रिया प्रिय पौढि रहे पर्यन्क।

प्रेम विवश खेले निश सारी भरि भरि निजु निजु अंक॥
परिरम्भन चुम्वन आलिंगन करत सहज निःशंक।
कवहु भृकुटि धनु मन मृग वेधत वान विलोकन वंक॥
लूटे सव विधि सुरत रीति सुख प्रिया सखी रँग अंक॥६॥

दोहा—ललित लड़ीले लाडिले लाल लाड़िली वाल ।
उठे उनीदे बहु विहरि आनन्द रूप रसाल ॥

॥ पद ॥

सेज सौं उठे लाड़िली लाल ।
भोर किशोर किशोरी जोरी आनन्द रूप अनूप रसाल ।
सुनि सहचरी वचन मुसिक्याये वदनाम्बुज श्रमकन के जाल ।
अलकावलि मानौं अलि वलि चलि होतहिये ये जु निहाल ॥
श्री प्रियासखी सकल ललना मिल विनय करत जो वनत सुहाल ।

॥ स्तोत्र दोहा ॥

रसिक किशोरी नागरी नागर रसिक किशोर ।
जीवनिधन श्रीप्रियासखी सहचरि जन चितचोर ॥

॥ पद ॥

जै श्री राधा रसिक किशोरी, रसिक रसायन कृष्ण किशोर ।
जै श्री राधा सुवरन गोरी, नील सघन घन कृष्ण सुगोर ॥
जै श्री राधा दिव्य दुती अति, देव दिव्य दुति देव वरेश ।
जै श्री राधा कोटि सूर्य छवि अगनित रविछवि कृष्ण सुरेश ॥
जै श्री राधा हेमलता तति, कृष्ण छवीलो तरुण तमाल ।
जै श्री राधा करुना रसमति, अति करुना कर कृष्ण कृपाल ॥
जै श्री राधा रास रसीली, रास रसीलौ कृष्ण रसाल ।
जै श्री राधा लाड़ लड़ीली, लाड़ लड़ीलौ कृष्ण विशाल ॥
जै श्री राधा मदन मंजरी, मदन मनोहर मोहनलाल ।
जै श्री राधा सहज सुन्दरी, सुन्दर सहज कृष्ण प्रतिपाल ॥

जै श्री राधा छटा छबीली, छटा छबीलौ छाजतिलाल ।
जै श्री राधा चित चट कीली, चटकीलौ चित कृष्ण दयाल ॥
जै श्री राधा सुधा सागरी, अमृत सागर सोभा श्याम ।
जै श्री राधा कुंज नागरी, कृष्ण कुंज नागर अभिराम ॥
जै श्री राधा नवल भामिनी, नवलभाम घनश्याम नवीन ।
जै श्री राधा परम पावनी, कृष्ण पावनत परम प्रवीन ॥
जै श्री राधा सरस सोहनी, सोहन सरस कृष्ण रस राज ।
जै श्री राधा मदन मोहनी, मोहन मदन कृष्ण रतिराज ॥
जै श्री राधा रदन कुन्दिनी, कुन्द रदन श्री कृष्णानन्द ।
जै श्री राधा प्रिया नन्दिनी, प्रिया सखी नन्दन रसकन्द ॥११

दोहा—प्रात राश मिस हात लिय कंचन झारी प्यार ।
मुख प्रक्षालन वसन पुनि निशि रस चिन्ह सह्मार ॥

॥ पद ॥

श्री ललिता रस निशि चिन्ह सह्मारे ।
मुख प्रक्षालन करि पोंछत लै वसन असन हित आनन्द भारे ॥
हंसत परस्पर मुकुर दिखावत सहचरि मुसक्यावत प्रिया प्यारे ।
कंचन झारी जमुना जल लै अप-अपने उत्साह विचारे ॥
पीक गंड मंडल मधि सोहत अंजन अधर कंदूर निहारे ।
आभूषन भूषन समुचित करि कच आवलि कवरी विस्तारे ॥
श्री प्रियासखी वहु विधि पिय प्यारी मंगल प्रात सुहात सिंगारे॥१२

दोहा—सहचरि राधा माधव हि हित करि वस्तु विधान ।
लाई थार सह्मार अति मंगल भोग प्रधान ॥

॥ पद ॥

श्री राधा माधव हितलांई ।
सहचरि निज निज कुंजन सों मिल थार सह्मार ललित ग्रह आंई ॥
प्रेम न वरनि जाति विवि उत्सुक मंगल उत्सव गति अधिकांई ।
श्री प्रियासखी प्रधान बस्तु कौ कर विधान सर्वस सचुपाई ॥१३

दोहा—विनय जुगलवर सौं करी सौंज समान सुभोग ।
वितरहु सुख आसन लसहु हित मंगल आरोग ॥

॥ पद ॥

जुगलवर आसन लसहु सुजोग ।
प्रेम पदारथ दृष्टि निहारहु आनन्द सिन्धु प्रयोग ॥
सामिग्री जो सोंज सम्हारी सो सुन्दरि आरोग ।
श्री प्रियासखी सुख वितरहु सब हितु सफल मंगला भोग ।१४।

दोहा—पावत रसिक प्रसन्न हिय प्रेम सहित परधान ।
सकल जिमावत सहचरी हँसि हँसि रस सामान ॥

॥ पद ॥

मुदित चित पावत प्यारी पीय ।
प्रेम सहित कर कौर लेत मिल ह्वै प्रसन्न हिय वीथ ॥
सहचरि हंसि हंसि परसि जिमावत सद नव नीत सुधीय ।
मधुर मधुर रस लेत मधुर गति उमंगि उमंगि पिया पीय ॥
श्री प्रिया सखी लखि वसी कामु ह्वै तृपति न मानत जीय ॥१५॥

दोहा—पाये प्रेम पदार्थ रुचि अनुपम परम विलास ॥
अचवन अचवत हू उमंगि उर में अधिक हुलास ।

॥ पद ॥

कुमरवर प्रेम पदारथ पाये।
निज निज रुचि अनुसार अनूपम सुन्दरि उर उमगाये।
सब रस राशि रसिक रस रागी अधर सुधा अचुवाये॥
श्री प्रिया सखी के प्रान जीवन धन अधिक विनोद बढ़ाये॥१६॥

दोहा—पाय नागरी नागरहि लसे सिंहासन आय।
वीरी ललित लवंग लहि आरोगी अति भाय॥

॥ पद ॥

नागरी नागर उर रस पाय।
हंसे बसे हिय लसे सिंहासन मदन मनोहर आय॥
वीरी ललित लवंग राग एला लव लहि मुसिक्याय।
श्री प्रिया सखी स्वामिनी श्याम जु आरोगी अतिभाय॥१७॥

दोहा—मन्मथ मन मथ मन मथ्यौ वंक विलोकन वाल।
नख रेखा लखि लाड़िली निज उर कर्तव लाल॥

॥ पद ॥

मथ्यौ मन मन्मथ मन्मथ वाल।
उर शंकर शिर पुंड लखी निज नखरेखा सु विशाल।
हृदय जानि निश्चय करिकें जिह सुन्दर कर्तव वाल॥
श्री प्रियासखी पट अंचल कीनी वंक विलोकन हाल॥१८॥

दोहा—अरस परस हिय हरस दृग सरस करसरस प्रेम।
कियौ लाल मनभामतौ तोरि तीर सब नेम॥

॥ पद ॥

मिले दोऊ सुन्दर मरकत हेम ।
अरस परस हिय हरस दरस दृग प्रफुलित कीरति खेम ॥
सरस सुधारस बरस करम करि हँसि हँसि प्यारी प्रेम ।
श्रीप्रियासखी लालन मन भावन तोरि तीर सब नेम ॥१६॥

दोहा—हंस हंसिनी ललित सर सोहत अधिक बिराज ।
मिलि सहचरि वर रसिक सखि लाईं आरति साज ॥

॥ पद ॥

विलसत हंस हंसिनी प्यारे ।
ललिता कुंज प्रेम रस गारे ।
सोहत सौन मुक्तसर साजे ॥
सिंहासन सुख अधिक विराजे ।
सहचरि मंगल वाद्य वजाये ॥
मंगल गान विविधि विधि गाये ।
आरति मंगल रसिक रसीली ॥
वारति मंगल माद नसीली ।
नाना भेद रंग उपजाये ॥
मंगल ताल मृदंग सुझाये ।
मंगल परम नवेली जोरी ॥
मंगल कृष्ण राधिका गोरी ।
मंगल सकल मनोरथ पाये ॥
मंगल प्रियासखी अति भाये ॥२०॥

दोहा—भई मंगला आरती ललिता मंगल मंज ।
गलवाहीं दै जुगल मिल चले विशाखा कुंज ॥

॥ पद ॥

चले मिल जुगल-विशाखा कुंज ।
विनय पाय गलवांही दै संग सकल सहेली पुंज ॥
वरसत पुहप ढुरत चँवरे कर सरसत मधुकर गुंज ।
हरसत प्रियासखी जै जै धुनि करसत मुनि मन कंज ॥ २१ ॥

दोहा—धोय जुगल पद कमल पुनि सिंहासन पधराय ।
अव गाहन हित करि-विनय भई तयारी जाय ॥

॥ पद ॥

जुगल वर सिंहासन पधराये ।
चरन कमल मकरन्द धोइ पुनि पुनि निज भाल लगाये ॥
अवगाहन हित विनय करी अलि इच्छा पाय निधाये ।
करि तैयारी प्रियासखी प्रिय प्यारी प्रेम बुलाये ॥ २२ ॥

दोहा—चौकी रतन सु हाट की श्री राधा गोविन्द ।
अवगाहे मिल चन्द छविवृन्द अमन्दानन्द ॥

॥ पद ॥

अवगाहे मिल श्री राधा गोबिन्द ।
चौकी रतन सुहाट की छवि अद्भुत चन्द ।
सहचरि इच्छा अनुसरी सुन्दरिवर वृन्द ॥
कर उछटावत केलि करत जल परम अमन्दानन्द ।
मुख अनुराग राग भर वारी खेलत अति सुखकन्द ॥
श्री प्रियासखी श्यामा सहचरि तिन धोवत पद अरविन्द ॥२३

दोहा—न्हाय न्हवाये प्रेम सौं सब सहचरि समुदाय।
अप अपनी अभिलाष सौं प्यारी प्रीतम भाय॥

॥ पद ॥

प्रथम विवि प्रेम सरोवर-न्हाय।
पुनि अन्हवाये कालिन्दी रस सब सहचरि समुदाय॥
अप अपनी अभिलाष माधुरी प्यारी प्रीति बढ़ाय।
अद्भुत कुंज पुंज रसरागी भाव भावना भाय॥
श्रीप्रियासखी अंग अंग विशाखा करशाखा समुदाय॥ २४॥

दोहा—सुघराई सग अंग की लखि लखि सखि बलि जात।
झीं पट सौं पोंछिकें रस सिंगार डुवात॥

॥ पद ॥

लखि लखि अँग अँग की सुघराई। झीने पट पौंछे मन लाई॥
पीताम्बर नीलाम्बर राजे। सिंहासन रस राज बिराजे॥
विथुरी मांग अलक कचकारे। विवि इच्छा अनुसार सम्हारे॥
आभूषण शोभा अधिकाई। भूषण अंग अंग दुति पाई॥
नख शिख लों रस सिन्धु सुहाये। चन्दन चर्च मुकर मुखराये।
भाव भरे गत आलस गाजे। श्री प्रिया सखी हिय कुंज विराजे॥

दोहा—भोग श्रृंगार सुहावने आरोगत मुसिक्याय।
मधुर माधुरी राधिका माधव सब विधि भाय॥

॥ पद ॥

सब विधि भाय राधिका माधव भोग श्रृंगार आरोगत सुन्दर।
कंचन कृत चौकी पर विलसित रतन जटित रस थार मध्य वर॥

पावत कबहु पवावत सहचरि कौर बनाय प्रेम सों निजु कर।
श्री प्रियासखी हिये उत्कंठा बढ़त बढ़ावत विये परस्पर ॥२६॥

दोहा—लै झारी अचवावहीं सहचरि मोद बढ़ाय।
दै कुंकुम को तिलक वर वीरी पान पवाय ॥

॥ पद ॥

आली अचुवावत लै झारी।
निर्मल यमुना जल सौं अचवन करत मुदित ह्वै ह्वै पिय प्यारी ॥
कर अँगौछ कुंकुम सु भालपर नीकौ टीकौ सुषमाकारी ॥
श्री प्रिया सखी हित चित सौं वीरी देत विशाखा छिन छिन बारी ॥

दोहा—छवि अपार श्रृंगार की आरति जय जय कार।
करत प्रेम परिवार मिल वार वार बलि हार ॥

॥ पद ॥

श्री राधिका माधव छवी अपार।
करत प्रेम परि वार मिलीं अलि आरति रति श्रृंगार ॥
वीनावेनु वाद्यवर विलसित गावत जय जय कार।
श्री प्रियासखी तृनतोर जोर कर वार २ वलिहार ॥२८॥

दोहा—चले विशाखा कुंज सौं कुंज करत विश्राम।
दिवस मध्य में राजहीं श्री चित्रा सखि धाम ॥

॥ पद ॥

चले रसिकवर पुलकित मनियाँ।
कुंज कुंज पुंजन अंगनियाँ।
एक रूप विलसित अधि कहियाँ ॥

मेलत कण्ठ परस्पर वहियाँ ।
व्यजन चौर ढोरत सब सखियाँ ॥
दरशन रूप रसीली अखियाँ ।
पिय प्यारी सुख सुखी हरखियाँ ॥
श्री प्रियासखी नवलाल निरखियाँ ॥ २९ ॥

दोहा—वर विहार-बिहरत परम रसिक बिहारीलाल ।
रूप मंजरी आदि के हिय कौं करत निहाल ।

॥ पद ॥

वर विहार सौं रसिक विहारी कुंज २ पग धारेंरी ।
रूप मंजरी आदि मंजरी महल मनोज सुधारेंरी ॥
केलि कलित कुंजन मंडल मधि सहचरि वृन्द निहारेंरी
श्री प्रियासखी हिय मंजु कुंज में गुंजन गुंज विहारेंरी ॥३०॥

दोहा—अवलोकन धन केलि सौं पूरन कर अभिलाष ।
आए चित्रा कुंज में चारु चरित परकाश ॥

॥ पद ॥

अवलोकन धन केलि विहारी चित्राकुंज पधारेरी ।
पूरन कर अभिलाषे विलासन चारु चरित्र जु धारेरी ॥
भोजन भवन भामती नीके आदर रुचि अनुसारेरी ॥
उत्कंठा इच्छा छवि छाजत सिंहासन वैठारेरी ॥
चाव-चौगुने सकल सहचरिन चित्रा कारज सारे री ॥
श्री प्रियासखी अलौकिक शोभा राधामाधव प्यारे री ॥३१॥

दो—रतनजटित चौकी धरे विविध सौंज भर थार ।
विनय पाय भोजन करत सुन्दर दोऊ सुकुमार ॥

॥ पद सारंग ॥

भोजन करत जुगल सुकुमार।
रतन जटित चौकी पर राजत विविध सौंज भरि थार।
विनय करत मिल सकल मंजरी पावहु प्राण धार॥
भोज्य भक्ष्य पुनि लेह्य चोस्य रस अधर सुधा परवार।
प्रिया प्रेम धारा मय घूँटत मानत तृप्तिन सार॥
करहु किशोरी गोरी अनुभव अभिलाषा अनुसार।
कोटिन षट्रस वारों रसना विवि पीवन रस पार॥
श्री प्रियासखी चित्रा अलिजू के धन्य भाग अवतार॥३२॥

दोहा—अचवन करत सुमुख कमल लै-लै सखिनसमाज।
प्रेम सहित आरोग हीं वीरी आरति साज॥

॥ पद ॥

आरति वारति रति सौं आली।
अचवन कर वीरी धर लाली॥
किए सकल मिल प्रेम समाजे।
गान गान गति सौं अति साजे॥
चमर ढुरावत कोऊ अभिलाषी।
व्यजन मोर छल रति सुख राशी॥
जै जै करत सर्व रस धारी।
श्री प्रिया सखी विवि वदन निहारी॥३३॥

दोहा—विलसे विवि वर आसने विनय करत सब बाल।
जै जै ध्वनि सौं आदि लै गुंजत कुंज विशाल॥

॥पद स्तोत्र॥

जय जय कृष्ण कुमर वर सुन्दर, कुमरि किशोरी सुन्दरि राधा।
जै जै कृष्ण रसिक रस रासी, रसिकिन रासि रसीली राधा॥
जै जै कृष्ण सुधारस सागर, मधुर सुधारस सागरि राधा।
जै जै कृष्ण वदन शशि शोभा, पूरण चन्द्र वदन छवि राधा॥
जै जै कृष्ण कुंज लीलाधर, कुंज २ लीला भय राधा।
जै २ कृष्ण छटा छवि सीमा छटा छवीली छवि श्री राधा॥
जै २ कृष्ण केलि कौतुक कुल सकल केलि कौतुक कुल राधा।
जै २ कृष्ण प्रिया सखि प्यारौ प्यारी प्रिया सखी श्री राधा॥३४

दोहा—लता कुंज चम्पक लता आवत देखे पीय।
श्रीचित्रा सखिकुंज सौं विनय भरे प्रिया पीय॥

॥ पद ॥

श्री चित्रा मन्दिर सौं राधा-माधव चम्पकलता कुंज पग धारे।
ललित लडीले लाल लाड़िली लाड़ भरे लोचन रतनारे॥
विनय पाय विलसे सुख शैया मध्य सैन मन मदन विहारे।
ललितादिक लखि २ हरसित हिय चम्पक लता व्यजन करढारे॥
श्री प्रिया सखी विलोकि वदन छवि अलसौंहे सोहत प्रीय प्यारे॥३५

दोहा—पौढ़े रस सागर जुगल मन मोहन अंग अंग।
सुखी करत सब सहचरिन विहरतशोभा संग॥

॥ पद ॥

मध्य कुंज पौढ़े रस सागर।
मन मोहन तन सुखी करन सग सखी प्रेम निधि नागर॥

विहरित शोभा संग अंगरँग कोटि अनंग सुखाकर।
रस वरसावत हिय हरसावत चितवत रसिक कलाधर॥
श्री प्रियासखी मानस मधुकर दृग कमल मूँद सोये सुख आगर॥३६

दोहा—परम प्राण धन कुंज में करत विहार विशाल।
विहरहु आनँद सिन्धु विधु राधामाधव लाल॥

॥ पद ॥

प्रान धन राधा माधव लाल।
रस सागर आगर शोभा सुख रूप उजागर जाल॥
प्रेम परस्पर चारु चौगुने सहचरि संग रसाल।
नित्य नाम लीला मय जोरी रूप धाम सु विशाल॥
श्री प्रिया सखी हिय कुंज विहारिन आनन्द सिन्धु दयाल॥३६

दोहा—मंजुल मंगल अमल रस वरसत कुंज कुटीर।
हरसत हिय लालन जुगल शीतल मंद समीर॥

॥ पद ॥

अमल रस जुगल वरसत मुदित ह्वै हिये।
रसलीला ललित लाड़िले सहचरी
वृन्द शोभा वलित कलित केली विये।
उठत उनिदित क्षुधित पी सुधाधर मुदित,
मृदुल हासा लसित ललित लावन्निए।
वरस रस कुंज सजि मंजु मंगल महा,
हरस हँस धीर जू कुटीर वर धन्निये।
श्री प्रिया सखि लखी आँख जुग मूंदिके,
राधिका माधवी जोरि जुग वरनिये॥ ३८॥

दोहा—संध्या उत्थापन सजे मेवा ऋतु फल फाल।
लावत मिल कें भोग हित सकल सहेली वाल॥

॥ पद ॥

संध्या उत्थापन जयमाल।
मुख धुवाय पहिराय सजाये जीवन दोऊ लाल।
चौकी लाय धरे थारन भर मेवा फल रस फाल॥
लावत मिल के ऋतु हित संध्या भोग सहेली वाल॥
रंग रंगीली रंगदेवी निज कुंज लखे प्रतिपाल।
श्री प्रिया सखी गावत प्रिया प्यारे सकल मंजरी जाल॥३९॥

दोहा—अचवन कर वीरी लियें आरोगे सुकुमार।
वारति आरति प्रेम सौं रंग रँगी बलिहार।

॥ पद ॥

रंगीली रँगी रंग के सार।
अचवन अचुवाये वीरी हित आरोगन सुकुमार।
संध्या आरति वारति हेली गावत गान अपार॥
श्री प्रिया सखी पिय वदन विलोकत वार २ बलिहार॥४०॥

दोहा—प्रथुल प्रार्थना सौं चले भले सुदेवी द्वार।
अरघ सहचरी कौ लियें राजे लता अगार।

॥ पद ॥

प्रार्थना प्रथुल अनौंखे प्यार।
चहुँ दिश सेवा सखी वृन्द में कमल कर्णिकाकार।
भले बने भावी रंगराते चले सुदेवी द्वार॥

अरघ देत शोभा सीमा कौं आवहु कहत दुलार।
श्री प्रिया सखी सुख आसन राजे जुगल लता आगार॥४१॥

दोहा—आवन मन भावन पिये हेली भरी उछाह,
गाय सुदेवी सुन्दरी प्रवहत प्रेम प्रवाह।

॥ पद ॥

लेत नव कुंज नैनकौलाह।
मन भावन आवन में हेली मान्यो अधिक उछाह।
गाय सुनाय रिझाय मनाये वचन विनोद सराह॥
श्री प्रिया सखी पिय हिये सुदेवी सुन्दरि प्रेम प्रवाह॥४२॥

दोहा—इच्छा भोजन पान रस पाये कुंज किलोल।
सुरभि वर्तिका आरती वारति अली अमोल॥

॥ पद ॥

करत विवि इच्छा भोजन डोल
अली वृन्द मानस रुचि पूरत धारत कुंज किलोल।
सुरभित धूपवर्तिका आरति वारति सहचरि गोल॥
श्री प्रिया सखी रस पान लालिमा फवी सुअधर अमोल।४३।

दोहा—केलि अनौखी करन हित चले लड़ीले लाल।
अली तुङ्ग विद्या महल शम्पा श्यामतमाल॥

॥ पद ॥

केलि अनौखी करन तुङ्ग विद्या-ढिंग चले परम प्रिय प्यारी।
तिन उतकंठा सों पधराये कुंज विहारिन कुंज विहारी॥
लाल लड़ीले सोहत अद्भुत लली लाड़िली के शिरसारी।
श्रीप्रियासखी सुकुमार श्यामतन शम्पाशत सोभा सुकुमारी॥

दोहा—रसिक रसायन बन गये रास हेत सुकुमारि।
हंसत विहारिन लाड़िली बने नवल लखि नारि॥

॥ पद ॥

रास रस रसिक मोहन वने सामरी।
उदित उत्साह वल आलि मंडल विमल,
कमल दल कर्णिका कृष्ण छवि भामरी॥
चरन वर धरन मन हरन गन्धर्ब गन,
शरन रन सुरन जन प्रान धन धामरी॥
करन की परन मन उठन अंसन नमन,
गमन सम मृगनृपन विपिन विधु वामरी।
हँसत अति प्रीति जब सर्ब मन हरव नव,
श्री प्रिया सखि परव मधुर धव नामरी॥ ४५

दोहा—रास विहार विनोद कर रसिक विहारी लाल।
गये इन्दुलेखा महल पाय सुधारसपाल॥

॥ पद ॥

रसिकवर रास विहारीलाल।
गये इन्दु लेखा की रेखा महल विनोद विशाल॥
पाय तुंगविद्या विरचित चित चाव समान रसाल।
पधराये दै अरघ सुखासन गल पहराई माल॥
श्री प्रिया सखी व्यारू हित कीनी तैयारी तत्काल॥ ४६॥

दोहा—व्यारू करत प्रसन्न चित गोरी नवल किशोर।
देत परस्पर कौर कर घूँटत सुधा अथोर।

॥ पद ॥

व्यारू करत नवल किशोर।

रूप रस सौं पगे पावत वस्तु वृन्द अथोर ।

प्रेम रस सोई सुधा धारा घूंटत प्रिय चितचोर ॥

परस्पर दे हाव भावन कौर तृपित न थोर।

अलिविचित्र कटाक्ष कक्षा षट्रस वारि करोर ॥

श्री प्रियासखी प्रसन्न व्याहुलहेतु ग्रन्थी जोर॥ ४४ ॥

दोहा—अचबन अचवावत अली वना वनीकौं संग ।

हँसत कहत सब होयगौ आजु व्याहुलौ रंग ॥

॥ पद ॥

अचबन अचवावत समहेली

शुद्ध कुंज मंजुल रस ढारत झारी कनक वदन अलिवेली ।

हिय अनुराग राग रस सुरचित एला लौंग सुकेली ॥

हँसत कहत सब होय व्याहुलौं रंग सुरति रसरेली ।

श्री प्रियासखी टेहुलौ करिहैं बना बनी मन मेली ॥४८॥

दोहा—आजु इन्दु लेखा लखी आवत जूथ अली ।

राधा माधव व्याहुलौ सुन श्रीचन्द्र गली ॥

॥ पद ॥

आजु इन्दुलेखा निजु मन्दिर आवत जूथ लखे अलियन के ।

सघन घटा ज्यौं सूर्यशशी मग त्यौं घिर रहे मार्ग गलियन के ।

कोऊ हार विहारिन हित लै कोऊ सेहरे लै कलियन के ।

विविध पान पकवान मिठाई डगर वटत मंगल डलियन के ।

श्री प्रिया सखी सुख सजे राधिका माधव धार हार लड़ियन के।४६।

दोहा—मंडप में विलसें जुगल भावुक भामर भाम।
भयौ व्याहुलौ प्रेम मय कुंज महल अभिराम।

॥ पद ॥

मंडप बैठे दुलहिन दुलहु।
जुगल किशोर किशोरी जोरी रूप वयस सम तूलहु।
भावुक भामर भाम धाम श्री कालिन्दी के कूलहू।
भयौ व्याहुलौ चन्द्र महल में राधा माधव फूलहु।
श्री प्रिया सखी प्रेम मय प्यारी प्रीतम रस बस झूलहु ॥५०॥

दोहा—आरति आली बृन्द मिल वारति सारति सैन।
धारति गौनौ टेहुलौ लखि अलसौंहैं नैन॥

॥ पद ॥

घृत कपूर वर्तिका आरती वारति आली वृन्द सैन की।
करत टेहुलो गौने को पुनि मुद्रा लखि अलसौंहे नैन की॥
सुन्दर वदन विलोकि दम्पती सुख सम्पति सीमा सुरैन की।
श्री प्रियासखी जु लाड़ लड़ाई सूरति मूरति कोटि मैन की ॥५२

दोहा-गावत मन भावत विये गुन गभीर रस धीर।
कीर कोकिला वीरवर वोलत कुंज कुटीर॥

॥ पद ॥

गावत मन भावन गुन गंभीर।
राव रवाव मृदंग मंजरी वोल अमोल सुधीर॥
गावत सकल मंजरी संग मिल वोलत कोकिल कीर।

आजु अनूपम छवि दम्पति की कहा कहौं री वीर ॥
श्री प्रियासखी गन्धर्व तुच्छ कर गीती कुंज कुटीर ॥५३॥

दोहा—सवन कियौ वुह रंगनयौ सयन समय हिय जान ।
पौढ़े श्यामा श्याम मिल जीवन ज्योति प्रधान ॥

॥ पद ॥

सबन मिल कीयौ रंग नयौ ।
सेज समार बिछाई सुख सौं जान सैन समयौ ।
पौढ़े श्री राधा माधब कौ अविरल संग भयौ ॥
श्री प्रिया सखी प्रधान जोती जीवन दृगन लयौ ॥ ५३
खंजन गंजन के दृगन अंजन कंजन सार ।
श्री चित्रा चित में दित ललिता केलि निहार ॥

॥ पद ॥

दृगन मन खंजन अंजन सार ।
गंजन करन मीन मृग चंचल अंचल ओट विहार ।
कंजन सौं मंजुल अंगुलि दल अकवत वारंवार ।
श्री चित्राजू मुदित चित्त में ललिता केलि निहार ।
श्री प्रियासखी हिय भरत हिलोरे करत वदन वलिहार ॥५४॥

दोहा—धन्य धन्य वृन्दावनी लता ललित विस्तार ।
धन्य राधिका माधवी मूरति धन्य विहार ।

॥ पद ॥

धन्य श्री वृन्दावन सुख धाम।

ललित लता विस्तार धन्य पुनि मोहन मदन विराम।

धन्य राधिका माधव मूरति कोटि काम अभिराम।

श्री प्रिया सखी "चन्द्र" "राधा" प्रभु धन्य नाम विश्राम॥५५

श्री राधामाधव चन्द्रगोपाल।

श्रीवृन्दावन नित्यरसाल।

इति श्री मन्माध्व गौडेश्वराचार्य श्री प्रभुचन्द्र गोपाल गोस्वामि

पुत्र श्रीराधा गोपाल गोस्वामि

सूनुगो० श्री ब्रह्म गोपाल प्रभु

(प्रिया सखी) प्रणीता

श्री हरिलीला

॥ समाप्तिमगात् ॥

(श्री)माध्वगौडेश्वर ग्रंथमाला से प्रकाशित पुस्तकें—

१—माधुरीवाणी—(श्री माधुरीजीकृता)
२—मोहिनीवाणी—(श्री गदाधरभट्टजीकृता)
३—सुहृद्वाणी—(श्री सूरदासमदनमोहन की)
४—अर्चाविधि—
५—वल्लभरसिकजी की वाणी—(श्री वल्लभरसिकजी की)
६—प्रेमसम्पुट—(श्री विश्वनाथ चक्रवर्त्तीजी कृत)
७—भक्तिरसतरंगिणी—(श्री नारायणभट्टजी कृता)
८—श्रीहरिलीला—(श्री ब्रह्मगोपालजी कृता)
९—गीतगोविन्दपद—(श्री रामरायजी कृत)
१०—गीतगोविन्द—(श्री रसजानिवैष्णवदासजी कृत)

यन्त्रस्थ—

१—श्री चैतन्यचरितामृत—(श्री सुवलश्यामजी कृत)
ब्रजभाषा में
२—गोवर्द्धनशतक—(श्री केशवाचार्य्यजी कृत)

प्रकाशित होने वाले—

१—ब्रजभक्तिविलास—(श्री नारायणभट्टजी कृत)
२—गोविन्दभाष्य—(श्री वलदेवविद्याभूषणजी कृत)
३—भागवत की भाषा—(श्री वैष्णवदासजी कृता)
४—भक्तिग्रन्थावली—(श्री विश्वनाथ चक्रवर्त्तीजी कृता)
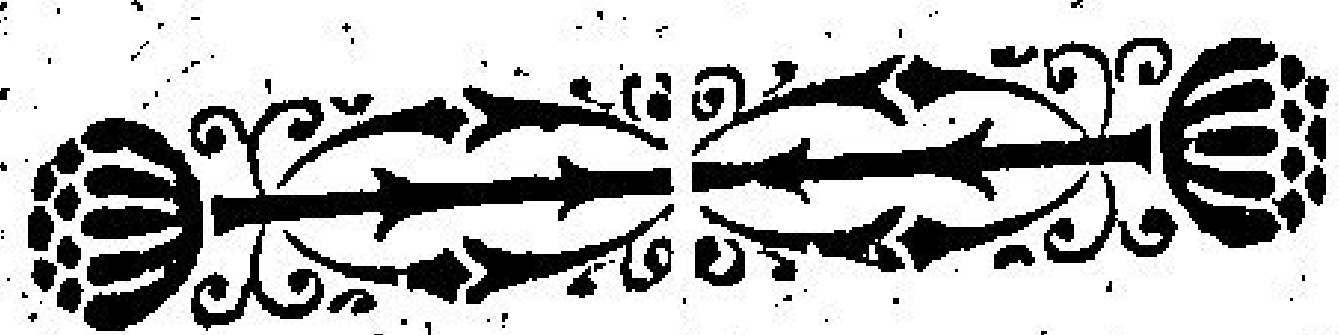
समर्पणपत्र

श्रीश्रीराधारमणचरणदासदेवस्यानुचरप्रवरस्य, सकलदेशप्रसिद्ध-
कीर्त्तिराशेः, प्रेममात्रसर्वस्वकृतस्य, निरन्तरसात्त्विकभावा-
वल्याविभूषितस्य, दीनतासागरस्य, मधुरस्वरालापैः
सर्वदागौरकीर्त्तनकर्त्तुः, श्रीरामदासेतिमधुर-
नाम्ना प्रसिद्धस्य, मदीयआराध्यदेवस्य,
श्रीगुरुदेवस्य, बाबाजिमहाराजस्य
प्रीत्यर्थे

समर्पितेयंवाणी

मॉडर्न प्रेस, आगरा में छपी।
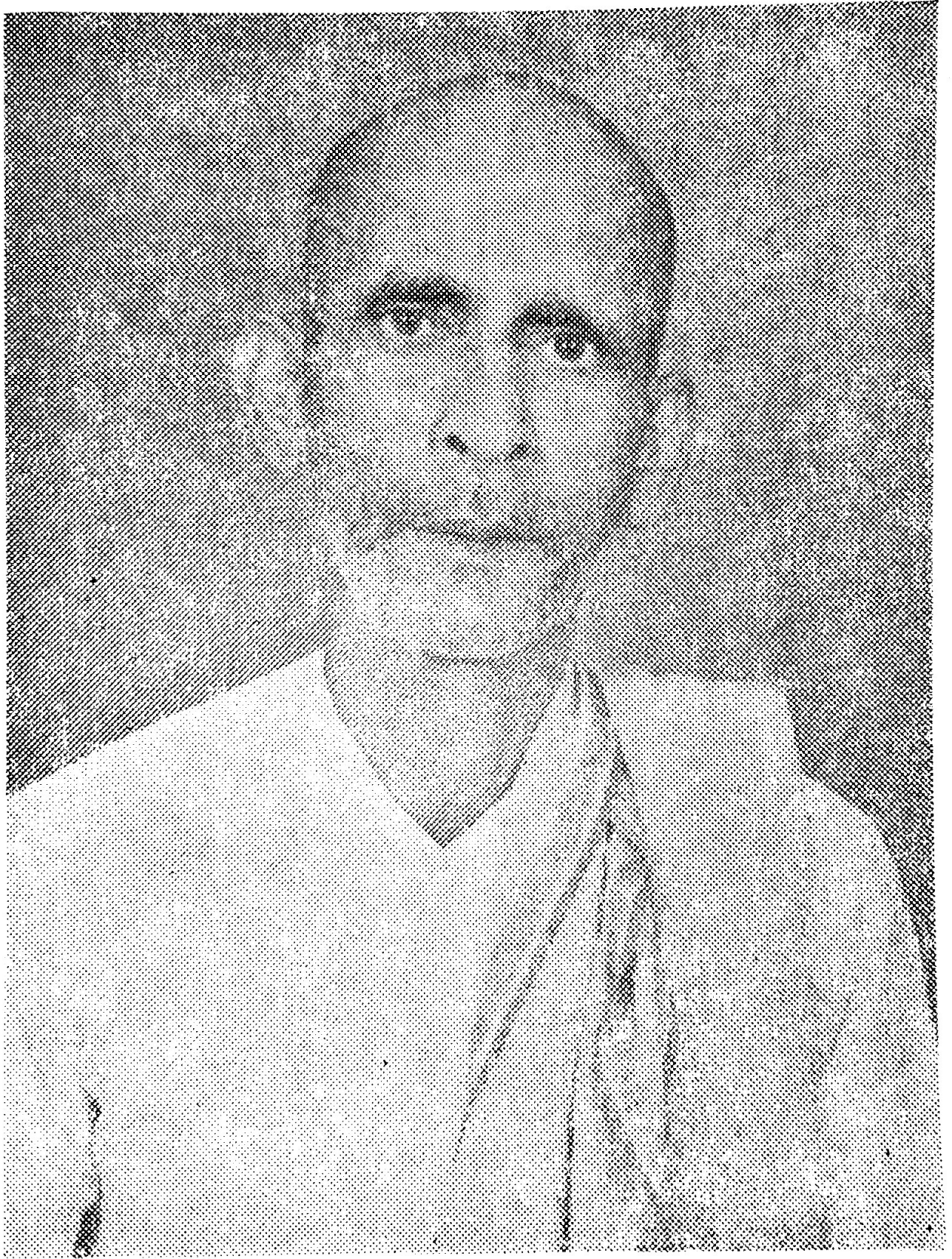
बाबा कृष्णदास जी

श्रीश्रीराधारमणो जयति

श्रीरामशिष्यं कटके सुजन्मं
पौगण्डकाले गुरुसान्निधाप्तम् ।
गौरोदयोर्व्यां परियान्तमाशु
श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।१

गौराङ्गदासादिभिरुन्मदेन
वृन्दावने वासकृतं सहर्षम् ।
भावानुरागेण वदन्तमुच्चैः
श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।२

गौडीयभक्तै रचिता रसाढ्या
उद्दीपिता ग्रन्थवरा हि येन ।
साहित्यरत्नं ब्रजभूषणं तं
श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।३

विज्ञैः समेतं सुमनःसरस्स्थं
ग्रन्थानुलेखं परशोधयन्तम् ।
सद्भक्तिसिद्धान्तनिधिं सनिष्ठं
श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।४

सौम्यं कृपालुं मधुभाषकण्ठं
शुक्लाम्बरं क्षीणतनुं नितान्तम् ।
निःसङ्गमानन्दवपुं महान्तं
श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।५

लीलास्मरन्तं सततं जपन्तं
देवाग्र उन्मत्तपरं नटन्तम् ।
संकीर्त्तनामोदमदं प्रसिद्धं
श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।६

भक्ताधरोच्छिष्टललातिचित्तं
स्नेहाभिमूर्त्तिं चलनातिधीरम् ।
भक्तानभक्ताञ्च नमन्तमुत्कं
श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।७

रोमाञ्चकम्पाश्रुतरङ्गयुक्तं
मुग्धं प्रशान्तं नितरां हसन्तम् ।
वैराग्यसिन्धुं करुणैकबन्धुं
श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ।।८

इति श्रीश्रीधामवृन्दावननिवासिना श्रीश्रीवृन्दावनदासेन
विरचितं श्रीश्रीकृष्णदासाष्टकं सम्पूर्णम् ।।